

उर्दू शायरी में औरत के रूप : एक तनकीदी जायजा

वसीम अनवर

किसी मुल्क का अदब और ज़िंदगी साथ साथ चलते हैं। अदब व फ़न हमारी बेहतरीन ख्वाहिशों और तमन्नाओं का इज़हार बन कर कभी ज़िंदगी और समाज को आईना दिखाता है तो कभी तन्कीद-ए-हयात और मशअल-ए-राह बन कर इन्सानी समाज को इतिहास मनाज़िल तय करने में मुआविन-ओ-मददगार साबित होता है। अदब अपने ज़माने की पैदावार होता है जिसमें उस अह्द के तारीखी, सियासी, मुआशी, इक़तिसादी, मुआशरती और फुनूने लतीफ़ा से मुताल्लिक़ मसाइल हालात-ओ-वाक़ियात की तस्वीरें कभी धुँदली तो कभी साफ़ साफ़ नज़र आती हैं।

उर्दू शायरी में दुनिया के अक्सर-ओ-बेशतर ज़बानों के अदब की तरह औरत का एक खास मुक़ाम और तसव्वुर है। उर्दू अदब के इब्तिदाई दौर में औरत एक खूबसूरत मुजस्समा थी। क़दीम शायरी में औरत के जज़्बात-ओ-एहसासों की तर्जुमानी के बजाए उस की सरापा निगारी और ज़ाहिरी नमूद-ओ-नुमाइश को पेश किया गया। औरत का वजूद महज़ मर्दों का दिल बहलाने और उनकी शहवानी ख्वाहिशों की तकमील के लिए था। क़दीम शायरी में औरत का तसव्वुर इस तरह उभरता है :

मौज-ए-दरिया को देखने मत जा
देख उस जुल्फ़-ए-अंबरी की अदा(1)

(वली)

जिसने तुझ हुस्न पर निगाह किया
नूर-ए-खुरशीद फ़र्शे राह किया(2)

(सिराज)

नाजुकी उस के लब की क्या कहिए
पंखुड़ी इक गुलाब की सी है(3)

(मीर)

मिट जाएं एक दम में ये कसरत-नुमाइयाँ
गर आईने के सामने हम आके हू करें(4)

(दर्द)

चमन है किस के गिरफ़्तार जुल्फ़-ओ-काकुल का
कि इस क़दर है परेशान हाल सुबुल का(5)

(सौदा)

हमारी अखलाक़ी क़द्रे ख़ुले तौर पर इश्क़ के इज़हार और शरीफ़ घराने की पर्दा नशीन ख़ातून का ज़िक्र करना भी मायूब करार देती थीं, इसलिए हमारे शोअरा ने इन क़यूद से बालातर एक तख़्युली महबूब को तसव्वुराती जामा पहनाया :

हमारे आगे तिरा जब किसू ने नाम लिया
दिल सितम-ज़दा को हमने थाम थाम लिया(6)

(मीर)

जान से हो गए बदन ख़ाली
जिस तरफ़ तू ने आँख भर देखा(7)

(दर्द)

अर्ज-ओ-समाँ कहाँ तिरी वुसअत को पा सके
मेरा ही दिल है वो कि जहाँ तू समा सके(8)

(दर्द)

अठारवीं और उन्नीसवीं सदी के हिन्दोस्तान में उर्दू शायरी में औरत का जो तसव्वुर उभरता है, वो या तो मर्द का एक खिलौना और बच्चा पैदा करने की मशीन है या फिर सितम पेशा जफ़ाकार हरजार्ड और बेवफ़ा महबूब यानी तवाइफ़ है। इस दौर में औरत के दो तसव्वुरात सामने आते हैं पहला जिस्मानी तसव्वुर है जो जिन्सी ताल्लुकात पर मबनी है और दूसरा जिन्स से बिल्कुल मुबर्रा है। पहले तसव्वुर की शायरी दबिस्तान-ए-लखनऊ की पहचान है जबकि दूसरे तसव्वुर की शायरी दबिस्तान-ए-दिल्ली की शनाख़्त है। इस मुआशरे में औरत की एक आज़ाद शनाख़्त नाक्राबिल-ए-तस्लीम थी। वो मर्द की तहज़ीब का सर चश्मा और तख़लीक़ियत की मुहरिक तो हो सकती थी लेकिन आज़ादाना शनाख़्त से महरूम रह कर। औरत का ये तसव्वुर जागीरदाराना निज़ाम के और मुआशी हालात का नतीजा था :

ख़ूब पर्दा है कि चिलमन से लगे बैठे हैं
साफ़ छुपते भी नहीं सामने आते भी नहीं(9)

(दाग़)

तिरछी नज़रों से ना देखो आशिक़-ए-दिल-गीर को
कैसे तीर-अंदाज़ हो सीधा तो कर लो तीर को(10)

(वज़ीर लखनवी)

बन-सँवर कर घर से निकले सैर को जाने लगे
जब हुज़ूम-ए-आशिक़ां देखा तो घबराने लगे(11)

(नामालूम)

उन्नीसवीं सदी के निस्फ़-ए-आख़िर में हमारे मुआशरे में इस्लाह-ए-निसवां की शऊरी कोशिशें शुरू हुईं। नतीजतन डिप्टी नज़ीर अहमद ने औरतों की तालीम की ज़रूरत को महसूस करते हुए औरतों के लिए इस्लाही नाविल लिखे। हाली ने मुनाजात-ए-बेवा लिख कर औरतों की ज़बूँहाली पर अफ़सोस ज़ाहिर किया। सर सय्यद अहमद ख़ाँ के मुक्राबले में मौलाना अल्लाफ़ हुसैन हाली, डिप्टी नज़ीर अहमद और मौलाना शिबली खासे कुशादा ज़हन नज़र आते हैं। मौलवी मुमताज़ अली और अल्लामा राशिद-उल-खैरी ने औरतों के लिए तहज़ीब-ए-निसवां और इस्मत रसाइल जारी किए। अल्लामा इक़बाल औरतों की ज़बूँहाली का ज़िक्र और अफ़सोस तो करते हैं लेकिन इन मसाइल का उनके पास कोई मुदावा नहीं है। नया ज़हन रखने वाले ये अदीब-ओ-शायर औरतों के मुआमले में महज़ रिवायती ज़हन रखते थे। ये लोग मशरिक़ी रिवायात और मज़हब के दायरे में रह कर औरत की तालीम के हामी थे। मौलाना हाली औरत के मुक्रदस

रूपों को अपनी शायरी में पेश करते हुए कहते हैं:

ए माओं बहनों बेटीयों, दुनिया की इज्जत तुमसे है
मुल्कों की बस्ती हो तुम्हें, क्रौमों की इज्जत तुमसे है(12)

अकबर इलाहाबादी मशरिकी अंदाज़ में तालीम-ए-निसवां की हिमायत करते हैं:

तालीम औरतों को भी देनी ज़रूर है
लड़की जो बे पढ़ी हो तो वो बेशऊर है
इन पर ये फ़र्ज़ है कि करें कोई बंद-ओ-बस्त
छोड़ें ना लड़कीयों को जहालत में तारो बस्त
लेकिन ज़रूर है कि मुनासिब हो तर्बीयत
जिससे बिरादरी में बड़े क्रदरो मंजिलत(13)

शायर-ए-मशरिक डाक्टर मुहम्मद इक़बाल की शायरी के मुख़्तलिफ़ तसव्वुरात की तरह तसव्वुर-ए-औरत भी मज़हब इस्लाम और मशरिकी तहज़ीब से माखूज़ है, वो आज़ादी-ए-निसवां और हुक्कू-ए-निसवां की बात तो करते हैं लेकिन मज़हब की हुदूद पेश-ए-नज़र होती हैं, इस ताल्लुक से उनके मशहूर अशआर देखिए:

वजूद-ए-ज़ून से है तस्वीर-ए-कायनात में रंग
इसी के साज़ से है ज़िंदगी का सोज़-ए-दरूँ
शरफ़ में बढ़के सुरय्या से मुश्त-ए-खाक उस की
कि हर शरफ़ है उसी दर्ज का दर-ए-मकुनों
मुकालमात-ए-फ़लातूँ ना लिख सकी लेकिन
इसी के शोले से टूटा शरार-ए-अफ़लातूँ(14)

बीसवीं सदी रुबा-ए-अव्वल में मुआशरे में बड़ी बड़ी फ़िक्री और तहज़ीबी तबदीलीयां हुईं। मशरिब से आने वाले नए तसव्वुरात मसावात, आज़ादी और जमहूरीयत वगैरा ने औरत को एक हक़ीक़ी वजूद अता किया। जो इस दौर की उर्दू शायरी में भी साफ़ नज़र आता है। हसरत मोहानी की शायरी में औरत का नया रूप नज़र आता है, ये तसव्वुर महज़ ख़्याली नहीं है और ना ही रिवायती बाज़ारु तवाइफ़ का तसव्वुर है, बल्कि जीता जागता और चलता फिरता, इन्सानि जज़्बात से मुज़य्यन हक़ीक़ी और घरेलू किस्म की औरत का तसव्वुर है:

ग़ैर की नज़रों से बच कर सबकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़
वो तिरा चोरी छिपे रातों को आना याद है
आ गया गर वस्ल की शब भी कहीं ज़िक्र-ए-फ़िराक़
वो तिरा रो-रो के मुझको भी रुलाना याद है
दोपहर की धूप में मेरे बुलाने के लिए
वो तिरा कोठे पै नंगे-पाँव आना याद है(15)

जदीद औरत का तसव्वुर तरक्की-पसंद तहरीक के साथ उभरता है। तरक्की पसंदों ने औरत को उस के हक़ीक़ी रूप में पेश करने की कामयाब कोशिशें कीं। फ़ैज़ अहमद फ़ैज़, मजाज़ लखनवी, ज़ॉनिसार अख़्तर, साहिर लुधियानवी, अली सरदार जाफ़री और कैफ़ी आज़मी वगैरा मुख़्तलिफ़ तरक्की पसंद शोआर के यहां औरत हक़ीक़ी शक्ल-ओ-सूरत में नज़र आती है। यही तरक्की-पसंद जब रूमानी अंदाज़ में शेअर कहते हैं तो उनके यहां वो ही रिवायती महबूब झलक मार जाता है जो उर्दू शायरी की शनाख़्त है। तरक्की पसंदों में सबसे अहम नाम फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ का है, इन्होंने अपनी शायरी के ज़रीये औरत के कई हसीन

रूप पेश किए हैं। वो औरत की तज़लील से नफ़रत करते हैं। नज़्म मेरे हम दम मेरे दोस्त से चंद अशआर मुलाहिज़ा किजिए :

गर मुझे उस का यक़ीं हो मिरे हम दम मिरे दोस्त
गर मुझे उस का यक़ीं हो कि तेरे दिल की थकन
तेरी आँखों की उदासी तेरे सीने की जलन
मेरी दिल-जूई मेरे प्यार से मिट जाएगी
गर मिरा हर्फ़-ए-तसल्ली वो दवा हो जिससे
जी उठे फिर तिरा उजड़ा हुआ बे-नूर दिमाग़
तेरी पेशानी से धुल जाएं ये तज़लील के दाग़
तेरी बीमार जवानी को शिफ़ा हो जाये
गर मुझे उस का यक़ीं हो मिरे हम दम मिरे दोस्त(16)

साहिर लुधियानवी औरत की मज़लूमियत और मस्कूमियत से परेशान हो कर कहते हैं :

मदद चाहती है ये हवा की बेटी
यशोदा की हम-जिंस राधा की बेटी
पयम्बर की उम्मत जुलेखा की बेटी
सना-ख़वान-ए-तक्रदीस-ए-मशरिक कहाँ हैं(17)

असरार-उल-हक़ मजाज़ औरत को हरकत-ओ-अमल की दावत देते हुए एहतिजाज-ओ-इन्क़िलाब में शामिल कर लेना चाहते हैं। वो औरत से आँसू पोंछ कर मुस्कुराने और बेदार हो कर अपने आँचल से पर्वम बना लेने की ख़ाहिश का इज़हार करते हैं :

दिल-ए-मजरूह को मजरूह तर करने से किया हासिल
तो आँसू पोंछ कर अब मुस्कुरा लेती तो अच्छा था
तिरे माथे का ये टीका मर्द की क़स्मित का तारा है
अगर तू साज़-ए-बेदारी उठा लेती तो अच्छा था
तिरे माथे पे ये आँचल बहुत ही खूब है लेकिन
तो इस आँचल से इक पर्वम बना लेती तो अच्छा था(18)

कैफ़ी आज़मी ने औरत का एक नया तसव्वुर उर्दू शायरी को दिया है, जो मजाज़ और साहिर वग़ैरा से भी ज़्यादा वाज़ह है। वो आज़ादी-ए-निसवां की ज़बरदस्त हिमायत करते हुए इस तारीख़ से नफ़रत करते हैं जिसने औरत को सदियों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़े रखा। वो औरत को राह-ए-हयात में मर्द के शाना बा शाना ग़ामज़न देखना चाहते हैं। कैफ़ी आज़मी की मशहूर नज़्म औरत के दो बंद मुलाहिज़ा किजिए :

ज़िंदगी जहद में है सब्र के क़ाबू में नहीं
नब्ज़-ए-हस्ती का लहू काँपते आँसू में नहीं
उड़ने खुलने में है निकहत ख़म-ए-गेसू में नहीं
जन्नत इक और है जो मर्द के पहलू में नहीं
इस की आज़ाद रविश पर भी मचलना है तुझे
उठ मिरी जान मिरे साथ ही चलना है तुझे
क्रदर अब तक तिरी तारीख़ ने जानी ही नहीं
तुझमें शोले भी हैं बस अशक़-फ़िशानी ही नहीं

तो हक्रीकत भी है दिलचस्प कहानी ही नहीं
तेरी पस्ती भी है इक चीज़ जवानी ही नहीं
अपनी तारीख़ का उनवान बदलना है तुझे
उठ मिरी जान मिरे साथ ही चलना है तुझे (19)

बीसवीं सदी की छटी और सातवीं दहाई में उर्दू शायरी में निसाई लब-ओ-लहजे की गूँज सुनाई देने लगती है। कहा जाता है कि उर्दू अदब में तानीसियत का रुजहान कभी भी एक गालिब रुजहान की हैसियत इख़्तियार ना कर सका, फिर भी उर्दू की मुख़लिफ़ शाएरात ने मर्द असास निज़ाम के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद की। तानीसियत की तहरीक के असरात आज सारी दुनिया के अदब पर नज़र आ रहे हैं। निसाई शऊर मा-बाद जदीदीयत की आगही का नाम है। अस्त्र-ए-हाज़िर की औरत मर्द की हाकिमीयत और उनके ताबे रस्म-ओ-रिवाज से आज़ाद हो कर अपने वजूद की मुतलाशी है। उर्दू अदब में जिन शाएरात ने निसाई जज़्बात के इज़हार पर पाबंदियों को तोड़ा उनमें अदा जाफ़री, फ़हमीदा रियाज़, किशवर नाहीद, परवीन शाकिर, सारा शगुफ़ता, शहनाज़ नबी, साजिदा ज़ैदी, ज़ाहिदा ज़ैदी और रफिया शबनम आबिदी वग़ैरा के नाम खास एहमीयत के हामिल हैं। कुछ मिसालें मुलाहिज़ा फ़रमाए :

कैसे कह दूँ कि मुझे छोड़ दिया है उसने
बात तो सच्च है मगर बात है रुस्वाई की
अब भी बरसात की रातों में बदन टूटता है
जाग उठती हैं अजब ख़्वाहिशें अंगड़ाई की (20)

(परवीन शाकिर)

हर लम्स है जब तपिश से आरी
किस आँच से यूँ पिघल रही हूँ
वो ख़्वाहिश-ए-बोसा भी नहीं अब
हैरत से होंट काटती हूँ
इक तिफ़्लक -ए-जुस्तजू हूँ शायद
मैं अपने बदन से खेलती हूँ (21)

(फ़हमीदा रियाज़)

दिल में है मुलाक़ात की ख़ाहिश की दबी आग
मेहंदी लगे हाथों को छुपा कर कहाँ रखों (22)

(किशवर नाहीद)

मा-बाद जदीदीयत से मुतास्सिर होने वालों ने पुरानी क्रदरों से इन्हिराफ़, फ़र्द की बे-मानवीयत, नज़रियों की नफ़ी, असरी हिस्सियत, रद्द-ए-अमल और बिखरते टूटते रिश्तों के दरमयान वजूद की तलाश को अपना मौजू बनाया। दौर-ए-हाज़िर की शायरी में यही तलाश-ओ-जुस्तजू औरत के तसव्वुर की असास है। आज की औरत मंतक्री और इस्तिदलाली नताइज के साथ नए जमालियाती उफ़ुकों से हमकिनार है। शायरा नसीम सय्यद बेबाकी से मर्द फ़नकारों की मुख़लिफ़त करते हुए कहती हैं—

मेरे फ़नकार मुझे खूब तराशा तूने
आँख नीलम की, बदन चांदी का, याक़ूत के लब
ये तिरे ज़ौक़-ए-तलब के भी हैं मयार अजब
तुझको नीलम सी नज़र आती हैं आँखें मेरी
दर्द के उनमें समुंद्र नहीं देखे तू ने

तू ने चशम-ओ-लब-ओ-रुख़सार की ख़त्ताती की
जो वर्क लिखे थे दिल पर नहीं देखे तू ने
तो भला क्या मिरी तस्वीर बना पाएगा (23)

शायरा शबनम शकील, एंगलज़ के इस ख़्याल को नज़्म के रूप में पेश करने में झिझक महसूस नहीं करती हैं कि शादी एक आईनी कहबगी है—

मिली थी मुझको एक बुढ़िया तवाइफ़ एक महफ़िल में
जो खुद पेशा नहीं करती थी एक चकला चलाती थी
मिरे जैसे घरेलू बीबियों के दिल जलाती थी
हंसी पहले तो वो अपने मिसी आलूदा होंटों से
मिरे कानों में फिर बोली वो सरगोशि के लहजे में
यहां पर नाचना पड़ता है सबको पेट की खातिर
हमें ग़ैरों के आगे तुमको शौहर के इशारों पर (24)

बहैसीयत मजमूई अदबी इक़दार-ओ-तसव्वुरात समाजी, तहज़ीबी और तमदुनी इक़दार-ओ-तसव्वुरात से माखूज़ होते हैं। तहज़ीब-ओ-तमदुन और समाजी क़दरों की तामीर-ओ-तशकील का अमल जारी-ओ-सारी है। नई क़द्रे पुरानी क़दरों की जगह लेती रहती हैं। इस तरह समाज और तहज़ीब-ओ-तमदुन तरक्की की नई नई मनाज़िल तय करते हुए इतिक्का पज़ीर है। हर अह्द की मुख़लिफ़ क़द्रे समाज में फ़र्द का मुक़ाम-ओ-मर्तबा मुतय्यन करती हैं जो इस अह्द के अदबी सरमाए से भी ज़ाहिर होता है। लिहाज़ा उर्दू अदब में औरत का तसव्वुर हमारी गंगा जमुनी तहज़ीब के अह्द बा अह्द इतिक्का की कहानी है और आज उर्दू शायरी में औरत का तसव्वुर इतिक्का की मुख़लिफ़ मनाज़िल-ओ-मराहिल तय करते हुए तरक्की की राह पर गामज़न है।

उर्दू और फ़ारसी विभाग

डॉ. हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश

सन्दर्भ :

1. इतिखाब-ए-वली, ज़हीरउद्दीन मदनी- मकतबा जामिआ लिमिटेड, नई दिल्ली 1971, सफ़ा नंबर 23
2. कुल्लियात-ए-सिराज, अबदुलक्रादिर सरवरी- क्रौमी कौंसल बराए फ़रोग़ उर्दू ज़बान, नई दिल्ली 1998, सफ़ा नंबर 317
3. इतिखाब-ए-कलाम-ए-मीर, मौलवी अबदुलहक़-अंजुमन तरक्की उर्दू, अलीगढ़ 1966, सफ़ा नंबर 169
4. दीवान-ए-दर्द, मुस्तिबुरूख़लील अलरहमान-मजलिस-ए-तरक्की अदब, लाहौर 1962, सफ़ा नंबर 52
5. इतिखाब-ए-ग़ज़लियात-ए-सौदा, मुस्तिबुरूशारिब दुव् लोई- उर्दू अकैडमी दिल्ली 1992, सफ़ा नंबर 40
6. इतिखाब-ए-कुल्लियात-ए-मीर, मौलवी अबद उल-हक़- अलहसनात बक्स परावेट लिमिटेड, नई दिल्ली 2008 सफ़ा नंबर 152
7. दीवान-ए-दर्द, मुस्तिबुरूख़लील अलरहमान- मजलिस-ए-तरक्की अदब, लाहौर 1962, सफ़ा नंबर 05
8. दीवान-ए-दर्द, मुस्तिबुरूख़लील अलरहमान- मजलिस-ए-तरक्की अदब, लाहौर 1962, सफ़ा नंबर 88
9. इतिखाब-ए-कलाम-ए-दाग़, मुस्तिब बेगम मुमताज़ मीरज़ा- उर्दू अकैडमी दिल्ली 2006, सफ़ा नंबर 131
10. वज़ीर अली सबा लखनवी। रेख़्ता डाट आर्ग
11. ना मालूम
12. कुल्लियात-ए-नज़्म-ए-हाली, इफ़्तख़ार अहमद सिद्दीक़ी। मजलिस-ए-तरक्की अदब, लाहौर 1970, सफ़ा नंबर 233
13. इतिखाब-ए-अकबर इला आबादी, तर्तीब सिद्दीक़ अलरहमान क़दवाई- मकतबा जामिआ लिमिटेड, नई दिल्ली 2011,

सफ़ा नंबर 122

14. कुल्लियात-ए-इक़बाल, एजूकेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली 2014 सफ़ा नंबर 65
15. हसरत की शायरी, यूसुफ़ हुसैन-मक़तबा ज़ामिआ लिमिटेड, नई दिल्ली 1983, सफ़ा नंबर 35
16. दस्त-ए-सबा, फ़ैज़ अहमद फ़ैज़-एजूकेशन बिक हाऊस अलीगढ़ 1982 सफ़ा नंबर 15
17. कुल्लियात-ए-साहिर, साहिर लुधियानवी-किताबी दुनिया दिल्ली 2006 सफ़ा नंबर 65
18. कुल्लियात-ए-मजाज़, इसरार-उल-हक़ मजाज़-किताबी दुनिया दिल्ली 2006, सफ़ा नंबर 130
19. कैफ़यात, कुल्लियात-ए-कैफ़ी आज़मी-एजूकेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली 2012-सफ़ा नंबर 86
20. माह-ए-तमाम, परवीन शाकिर-फ़रीद बुक डिपो दिल्ली 1997, सफ़ा नंबर 117
21. बदन-दरीदा, फ़हमीदा रियाज़-मक़तबा दीन-ओ-अदब लखनऊ 1978, सफ़ा नंबर 122
22. फ़नून (जदीद ग़ज़ल नंबर जिल्द दोम), 1969, सफ़ा नंबर 1268
23. आधी गवाही, नसीम सय्यद-इर्तिक़ा मतबूआत कराची 1994, सफ़ा नंबर 25
24. ख़्वातीन की शायरी में औरतों के मसाइल की तस्वीरकशी, शबनम शकील-वज़ारत तरक्की ख़्वातीन हकूमत-ए-पाकिस्तान, इस्लामाबाद 2005, सफ़ा नंबर 149-150